

वैश्विक दक्षिण से विकास के नए सिद्धांत की परिकल्पना : उनतीसवाँ न्यूज़लेटर (2026)



फ्रा लुका पासिओली का उनके एक शिष्य के साथ चित्र, यह जैकोपो दे' बारबारी द्वारा निर्मित माना जाता है (इटली), 1495-1500.

प्यारे दोस्तो,

ट्राईकॉन्टिनेंटल : सामाजिक शोध संस्थान की ओर से अभिवादन।

साल 2015 में संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (यूएनटीएडी) ने मशहूर अर्थशास्त्री रॉबर्ट एच. वेड का एक शोधपत्र छापा जिसका शीर्षक था 'द रोल ऑफ़ इंडस्ट्रियल पॉलिसी इन डेवलपिंग कंट्रीज़' [विकासशील देशों में औद्योगिक नीति की भूमिका]। वेड ने तर्क दिया कि जिन देशों ने देर से औद्योगीकरण किया और उसमें सफलता हासिल की (जैसे जापान और दक्षिण कोरिया), उन्होंने लगभग सभी मामलों में औद्योगिक विकास तथा प्रौद्योगिकीय उन्नयन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य की हस्तक्षेपकारी नीतियाँ अपनाईं। इसके लगभग एक दशक बाद 2024 में संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूनिडो) ने अपनी महत्वपूर्ण रिपोर्ट जारी की। इसका नाम था 'टर्निंग चैलेंजेज़ इंटर सस्टेनेबल सलूशंस : द न्यू एरा ऑफ़ इंडस्ट्रियल पॉलिसी' [चुनौतियों को सतत उपायों में बदलना : औद्योगिक नीति का नया दौर]। इसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया कि सतत विकास के लिए औद्योगिक नीति एक प्रमुख साधन है। 2015 में वेड के लेख और 2024 में यूएनआईडीओ की रिपोर्ट के बीच दुनिया का परिदृश्य काफी हद तक बदल चुका है। चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) की घोषणा 2013 में हुई थी, यह बुनियादी ढाँचे और औद्योगिक निवेश का एक प्रमुख स्रोत बन गई थी : 2013 और 2024 के बीच, संचयी बीआरआई जुड़ाव 1.175 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, और अकेले 2024 में, प्रारंभिक आंकड़ों ने 87 देशों में लगभग 340 बीआरआई सौदे दिखाए। इस जुड़ाव का अधिकांश हिस्सा निर्माण अनुबंधों के रूप में था, जिसमें परिवहन और ऊर्जा बुनियादी ढाँचा शामिल था, जो दोनों औद्योगिक विकास की नींव बने हुए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ़) औद्योगिक नीति के महत्व को नकार नहीं सकता लेकिन यह वेड के लेख या यूनिडो की रिपोर्ट का समर्थन नहीं करेगा। आईएमएफ़ की यह झिझक इसके कुछ हालिया ब्लॉग में दिखाई देती है, जैसे **Industrial Policy Can Lift Productivity – but Comes With Risks and Trade-Offs** (2025) और **Industrial Policy Is Adapting to Crises, but Remains Hard to Implement Effectively** (2026)। आईएमएफ़ के नज़रिए से भविष्य का निर्माण उसी असफल अतीत से जुड़ा हुआ है जो इस बात पर ज़ोर देता है कि विकास का मार्ग निजीकरण और विनियमन से ही बनेगा। जबकि आईएमएफ़ का खुद का शोध दिखाता है कि इस संस्थान को नियंत्रित करने वाले वैश्विक उत्तर के देश वैश्विक दक्षिण के देशों के मुकाबले औद्योगिक नीति का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। फिर भी, केंद्रीय बैंकों और बहुपक्षीय संस्थानों में, नीति विश्लेषकों का एक थका-माँदा तबका — जो **मस्तिष्क-ग्रहण** (ब्रेन कैप्चर) और आईएमएफ़ रूढ़िवादिता के माध्यम से विचारों के संकुचन द्वारा आकार दिया गया था — ने उस बहस को दबा दिया जिसे यूनिडो की प्रमुख रिपोर्ट से प्रभावित होना चाहिए था।



ट्राईकॉन्टिनेंटल : सामाजिक शोध संस्थान द्वारा बनाई गई कलाकृति, 2026.

हालाँकि, अधिकांश वैश्विक दक्षिण में, आईएमएफ़ हठधर्मिता की पुरानी रीतियाँ समाप्त हो गई हैं क्योंकि संगठन की समाज कल्याण के लिए सरकारी खर्च में कटौती (ऑस्टेरीटी) प्रधान मॉडल ने विश्वसनीयता खो दी है। लेकिन इसका स्थान क्या लेगा, यह अब तक अनिश्चित बना हुआ है। राजनीतिक दलों ने इस ऑस्टेरीटी-प्रधान मॉडल को चुनौती देकर और विकल्पों का वादा करके चुनाव जीते हैं। फिर भी इनमें से कुछ सरकारें एक वास्तविक विकल्प को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में विफल रही हैं और उन्होंने खुद को आईएमएफ़ की ओर वापस खिंचता पाया है, जैसा कि श्रीलंका में, जिसने अपना आईएमएफ़ कार्यक्रम जारी रखा, और सेनेगल में, जिसने अपने समझौते के निलंबित होने के बाद फिर से बातचीत शुरू की।

यह दुविधा – आईएमएफ़ मॉडल की विश्वसनीयता का नुकसान, लेकिन किसी विकल्प का अभाव – वेन्हुआ ज़ोंगहेंग (Wenhua Zongheng) के नवीनतम अंक के केंद्र में है। 'वैश्विक दक्षिण से एक नए विकास सिद्धांत का निर्माण' (Building a New Development Theory from the Global South) शीर्षक से, यह अंक एक सीधा-सादा सा लगने वाला सवाल पूछता है : यदि पिछली सदी में विकास को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत विफल हो गए हैं, तो नए सिद्धांत कहाँ से आएँगे ? शीर्षक का पूर्वसर्ग (preposition) मायने रखता है : से (from), न कि के लिए (for) यह कोई ऐसा सिद्धांत नहीं है जो कहीं और बनाकर वैश्विक दक्षिण पर थोपा गया हो, बल्कि ऐसा सिद्धांत है जो यहाँ लोगों के प्रयोगों से बनता है।

विकास सिद्धांत केवल दुनिया की व्याख्या नहीं करते। वे यह स्थापित करके राजनीतिक अपेक्षाओं को आकार देते हैं कि सरकारें और सामाजिक संस्थाएँ क्या संभव मानती हैं। वे भविष्य की हमारी कल्पना से उभरते हैं और बदले में, यह

सुनिश्चित करते हैं कि समाज उस भविष्य को कैसे प्राप्त करते हैं। अंक के शुरुआती निबंध में, त्सिंगुआ विश्वविद्यालय के छिन बेइचेन और जिंग जुन तर्क देते हैं कि सिद्धांत राजनीतिक कार्रवाई के क्षितिज को स्थापित करने में मदद करते हैं। जब कोई समाज अपने आगे के रास्ते की कल्पना करने की क्षमता खो देता है, तो वह विरासत में मिली संरचनाओं के भीतर फँस जाता है, भले ही वे संरचनाएँ अब काम न करती हों। यही हमारे युग का गहरा संकट है। दुनिया के अधिकांश हिस्सों में, भविष्य की कल्पना करने में व्यापक असमर्थता है। राजनीतिक प्रवचन अतीत की याद और आने वाली आपदा के डर के बीच झूलता रहता है। जैसा कि हमने **डोसियर नंबर 100** में दिखाया था कि भविष्य या तो मौजूदा असमानताओं की निरंतरता के रूप में या संकटों की एक शृंखला के रूप में प्रतीत होता है। इस सबके बीच एक सम्मोहक विकासात्मक कल्पना गायब है जो मानवीय ज़रूरतों को ऑस्टेरिटी से ऊपर रखती हो।



पढ़ना, माई चुंग थू (वियतनाम), 1964.

सिद्धांतों और विकास के मॉडलों से जुड़ी हमारी कल्पना को फिर से जीवित करने के लिए ज़रूरत है बुनियादी सवालों की ओर लौटने की, जैसे :

- समाज उत्पादक क्षमता का निर्माण कैसे करते हैं ?
- वे कैसे अर्थवान रोज़गार पैदा करते हैं ?
- राज्य अपनी जनता के जीवन को बेहतर करने की क्षमता कैसे प्राप्त करते हैं ?
- एक असमान श्रम विभाजन की व्यवस्था के अंतर्गत अपनी निर्धारित स्थिति से कोई देश कैसे बाहर निकल सकता है ?

इन सवालों के जवाब विकास के अमूर्त मॉडलों में नहीं हैं बल्कि उन सिद्धांतों में छिपे हैं जो एक बेहतर भविष्य के निर्माण के ठोस प्रयासों पर आधारित हैं।

ली शियांग और फंग चाओ दोनों शंघाई इंटरनेशनल स्टडीज़ यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं और अपने लेख में वे उस तरीके से प्रकाश डालते हैं जिससे वे क्रमशः पाकिस्तान और वियतनाम में की गई प्रगति का विवरण देते हैं। दोनों लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि ये प्रगति दक्षिण-दक्षिण सहयोग की केंद्रीयता को दिखाती है। ली शियांग पाकिस्तान की ऊर्जा प्रणाली की जाँच करते हैं और तर्क देते हैं कि विकास को केवल आर्थिक वृद्धि के रूप में नहीं, बल्कि राज्य की क्षमता के विस्तार के रूप में समझा जाना चाहिए। बड़े पैमाने की बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं, बिजली ग्रिडों और वितरित सौर ऊर्जा (distributed solar power) जैसी नई प्रौद्योगिकियों को केवल तकनीकी उपलब्धियों के रूप में नहीं, बल्कि उन तंत्रों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिनके माध्यम से समाज एक नए प्रकार के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक संस्थागत क्षमता का निर्माण करते हैं। सवाल केवल यह नहीं है कि बिजली कैसे उत्पन्न की जाए, बल्कि यह है कि बुनियादी ढाँचा कैसे सामाजिक संबंधों को पुनः आकार देता है और राज्यों की सार्वजनिक वस्तुएँ प्रदान करने की क्षमता को मज़बूत करता है।

दूसरी ओर फंग चाओ वियतनाम में चीनी औद्योगिक निवेश के अनुभव के माध्यम से, सिल्क रोड मैनुफैक्चरिंग (रेशम मार्ग विनिर्माण) – बीआरआई (BRI) के तहत औद्योगिक सहयोग के लिए एक नए मॉडल – की खोज करते हैं। फंग चाओ, वैश्वीकरण को बाज़ार ताकतों द्वारा शासित एक अपरिहार्य प्रक्रिया मानने के बजाय, औद्योगिक एकीकरण को ऐसी चीज़ के रूप में देखते हैं जिसे कई देशों में उत्पादन क्षमताओं का विस्तार करने के लिए सचेत रूप से व्यवस्थित किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, औद्योगिक उन्नयन, कार्यबल विकास, और क्षेत्रीय उत्पादन नेटवर्कों के निर्माण पर जोर दिया गया है जो भाग लेने वाले देशों की विकासात्मक संभावनाओं को कमज़ोर करने के बजाय मज़बूत करते हैं।



तब उनकी परछाइयाँ आसमान से गिर पड़ीं – 2, सना अर्जुमंद (पाकिस्तान), 2010.

दशकों तक विकास को बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्तर और अविकसित दक्षिण के बीच एक संबंध के रूप में परिकल्पित किया गया। इसके तहत उम्मीद यह थी कि कहीं और पहले से स्थापित मार्गों का अनुसरण किया जाए। फिर भी इस शोध लेखकों द्वारा खोजे गए अनुभव बताते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण नवाचार अब वैश्विक दक्षिण के देशों के बीच आदान-प्रदान के माध्यम से उभर सकते हैं। चीन के औद्योगीकरण, बुनियादी ढाँचे के विकास, गरीबी उन्मूलन और राज्य-निर्माण की प्रक्रियाओं को सार्वभौमिक नमूनों (मॉडलों) के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता। बल्कि उन्हें सामूहिक सीख और नए प्रयोगों के लिए संसाधन के रूप में देखा जाता है। अंततः ये विद्वान न तो वैश्विक ज्ञान को खारिज करने का प्रस्ताव रखते हैं और न ही किसी एक राष्ट्रीय मॉडल का महिमामंडन करते हैं। इसके बजाय, वे एक ऐसी बौद्धिक परियोजना के निर्माण का आह्वान करते हैं, जो सचमुच वैश्विक दक्षिण के दृष्टिकोण पर आधारित हो।

ऐसी परियोजना इस मान्यता को छोड़ने से शुरू होगी कि विकास सिद्धांत हमेशा कहीं और से आना चाहिए। यह उत्पादन को अनुमान से, रोज़गार को अमूर्त दक्षता से और सार्वजनिक क्षमता को बाज़ार हठधर्मिता से ऊपर रखेगी। यह एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरेबियन के ऐतिहासिक अनुभवों को एक सार्वभौमिक मानदंड से विचलन के रूप में नहीं, बल्कि सैद्धांतिक नवाचार के स्रोतों के रूप में अध्ययन करेगी। भू-राजनीतिक विखंडन, पारिस्थितिक संकट और आर्थिक अनिश्चितता से जूझ रहे एक दौर में, यह इस अंक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। वैश्विक दक्षिण के सामने चुनौती केवल नए बुनियादी ढाँचे, नए उद्योगों और नई संस्थाओं का निर्माण करना नहीं है, बल्कि सोचने के नए तरीकों का निर्माण करना भी है। इससे पहले कि समाज एक अलग भविष्य का निर्माण कर सकें, उन्हें पहले उसकी कल्पना करने की क्षमता को पुनः प्राप्त करना होगा।



पर्दे के पीछे, अबेल बेयेने (इथियोपिया), 2025.

इन लेखों को फिर से पढ़ते हुए मुझे युवा इथियोपियाई कवि लियू मेसफिन लिब्सकेल की कविता 'राइडिंग चाइनीज़ मशीन्स' (चीनी मशीनों की सवारी) की याद आई। अपने शीर्षक के बावजूद, कविता में चीन का कोई संदर्भ नहीं है। लिब्सकेल तो उन अफ्रीकी राजनेताओं का वर्णन कर रहे हैं जो शहर को डिज़ाइन करते हैं और अफ्रीकी श्रमिकों का भी जो इसका निर्माण। कविता एक रोमांटिक दृष्टिकोण से आधुनिकीकरण की निंदा नहीं करती; यह स्वीकार करती है कि इस तरह के परिवर्तनों की क्रीम चूकानी पड़ती है।

इस शहर में जानवर हैं,
वे चरमराते हैं, खड़खड़ाते हैं,
और पहली भोर से ही कराहने लगते हैं,
जब उनके अफ्रीकी ज़बान बोलने वाले मालिक जागते हैं,
उन्हें ढीले, मानवीय हाथों से
सुबह की भागदौड़ के बीच
रास्ता दिखाने के लिए।

फिर उन्हें बंद कर दिया जाता है—
मानो उनसे प्राण ही खींच लिए गए हों।
जब हम सोते हैं,
वे वैसे ही खड़े रहते हैं—
कहीं आसमान छूते, कहीं झुके हुए,
हमेशा भारी।

हम शहरों में सीमेंट उड़ेलते हैं,
कस्बों में, जंगलों के आर-पार,
आगे, और आगे,
मानो उत्सुक हाथों की उँगलियाँ
धरती पर फैलती चली जा रही हों,
उसकी देह में धँसती हुई।

शेर आकर टोह लेते हैं,
और धरती के नीचे दबी हुई वह विराट चीज़
प्रगति के नाम पर
दबाई-सिकोड़ी जाती हुई
गर्जना करती है।

नए जानवर – चीनी मशीनें – पुराने जानवरों, अफ्रीकी शेरों की दुनिया पर दबाव डालते हैं, लेकिन कविता दोनों पर निगाह रखती है। नए विकास प्रतिमान को पुराने मॉडल नहीं दोहराने चाहिए, जिसने मुनाफ़े के लिए प्रकृति और मनुष्यों को निगल लिया। इसके बजाय, इसे पुराने के अच्छे पहलुओं को शामिल करने का प्रयास करना चाहिए और समाज के लिए प्रकृति और मनुष्यों के बीच संबंधों का सावधानी से प्रबंधन करना चाहिए। यह वह नैतिकता है जिस पर छिन्न और जिंग ने अपने लेख में जोर दिया है और यह वैश्विक दक्षिण के योग्य किसी भी विकास सिद्धांत के लिए शुरुआती बिंदु है।

स्नेह सहित,

विजय